Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 4, April - 2026

DOIs:10.2018/SS/202604005 --:-- Research Paper / Article / Review

पर्यावरण चिंतन : मलयालम उपन्यास एनमकजे और हिंदी उपन्यास मरंग गोड़ा नीलकंठ हूआ के विशेष संदर्भ में

Nirmala A
Assistant professor, Guest faculty Department of Hindi, NSS College Nemmara, India
Email - nirmalanimmyscholar@gmail.com

सारांश: अम्बिकासुतन मंगाड का उपन्यास 'एनमकजे 'केरल के कासरगोड जिले में स्थित गाँवों के वास्तविक घटना पर आधारित है। साहित्य समाज का दर्पण है ।उसी तरह छत्तीसगढ़ के 'जादूगोडा 'नामक गाँव और आस पास के क्षेत्रों के घुटन भरी जिन्दगी से जूझते हुए मानव और पशु पक्षियों का जीवंत दस्तावेज है।दोनों उपन्यासों के उद्देश्य उपन्यासों के माध्यम से विकास की उस विभीषिका का विश्लेषण करना है, जो मनुष्य और प्रकृति के संबंधों को शत्रुतापूर्ण बना रही है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण , पारिस्थितिकी आलोचना, औद्योगिक त्रासदी, पर्यावरण विमर्श, एंडोसल्फान, रेडियोधर्मी प्रदूषण, जादूगोड़ा और कासरगोड ।

1.प्रस्तावना

आज विश्व भर में पर्यावरण शब्द पर निरंतर विचार विमर्श हो रहा है । [1] "पर्यावरण शब्द संस्कृत के परी + आवरण से बना है"। इसका अर्थ है है चारों ओर से घेरे हुए। इसके अंतर्गत शुद्ध वायु ,जल स्रोत ,पेड़ -पौधे, सूरज -चंद्रमा ,आसमान , वायु ,पृथ्वी की सभी जीव जंतुओंआदि शामिल होती हैं। 21 वीं सदी के साहित्य वैश्विक संकटों का प्रतिरोध भी है। पर्यावरण चिंतन से तात्पर्य मानव गतिविधियों और प्राकृतिक दुनिया के बीच संबंधों की सचेत, आलोचनात्मक और सतत जांच से है।
पारिस्थितिकी आलोचना र्क संदर्भ में मलयालम के मशहूर रचनाकार अंबिकासुतन मंगाड के 'एनमकजे ' उपन्यास 'और हिन्दी के मशहूर लेखिका महुआ माजी के हिन्दी उपन्यास मरंग गोडा नीलकंठ हुआ को देखते है, तो एक भयावह सत्य हमारे सामने उभर कर आते है। ये दोनों उपन्यासों में प्रकृति की बलि देकर विकास की ओर बढ़ते जा रहे संस्कृति को चुनौती देते हुए बातों का आकलन है। जहां एनमकजे एंडोसल्फान के जहर से अपाहिज होती पीढी की चीख है ,वहीं मरंग गोडा.. युरेनियम के विकिरण से मरती आदिवासी संस्कृति का भीषण विलाप भी है।

2.विशलेषण

एनमकजे की कहानी में नीलकंठ और देवयानी के इर्द-गिर्द घूमती है , जो प्रकृति के करीब रहने के लिए जंगल में एक पहाड़ी इलाके पर बसते हैं।लेकिन एनमकजेऔर आसपास के काजू बागानों में एंडोसल्फान के छिड़काव से हुए भयानक विनाश का सामना करते हैं।[2]"मनुष्य ने प्रकृति के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया है..." देवयानी पुरुष समाज के शोषण के शिकार बनकर दूर प्रकृति की निर्जन प्रांत में शरणार्थी के रूप में आ बसा है। रास्ते से मिला हुआ खून से लिपटते परीक्षित नाम से एक अनाथ बच्चे को लेकर देवयानी पंची नामक स्थानीय चिकित्सक के पास पहुंचते हैं । उन्हें पता चलता है कि यह विचित्र शरीर वाला बच्चे की बीमारी लाइलाज है।वहां उसके तरह कई विकलांग लोग भी है।उस बच्चों के माध्यम से वे स्वयं को जान और समझ पाते हैं । नीलकंठनऔर देवयानी बाद में एनमकजे की आशा बन जाते हैं। नीलकंठ उपन्यास का नायक है। वह पूर्व पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता भी है।
वह कीटनाशक माफिया के खिलाफ लड़ाई लड़ता है।देवयानी नीलकंठ की जीवनसंगिनी। वह करुणा और ममता की प्रतिमूर्ति है। वह ही वह पात्र है जो एक अपाहिज और बीमार बच्चे को गोद लेकर नीलकंठ को उनकी गुफा (एकांतवास) से बाहर निकलने और समाज की मदद करने के लिए प्रेरित करती है।

परीक्षित एक सात साल का बच्चा जो एंडोसल्फान त्रासदी का सबसे बड़ा शिकार है। वह देख नहीं सकता। उसे उपन्यास में पीड़ितों की "जीवित त्रासदी" के रूप में दिखाया गया है। नीलकंठ और देवयानी उसे अपनाते हैं। इसके अलावा श्रीराम डॉक्टर अरुण कुमार ,प्रकाश आदि कई पात्र कीट नाशक के विरुद्ध आवाज उठाते है।
लेखक अंबिका सुतन जी भी इसमें शामिल होते हैं।[3] "हवा जहरीली हो चुकी है, पानी में मौत तैर रही है और मिट्टी अब जीवन नहीं, अपाहिज बच्चे पैदा कर रही है।" जटाधारी भगवान इसमें एक प्रतीकात्मक तत्व है ,लोगों की अंध श्रद्धा का प्रतिबिंब है।
जटाधारी पहाडियाँ और उसके आसपास के मनमोहक इलाका अभिशाप और कीटनाशक का विनाशक के कारण नरक के समान होता। [4]"स्वार्थ की पराकाष्ठा को देखिए कि हम ने उन मधु मक्खीयों को भी मारा डाला ,जो हमारे जीवन का आधार थीं। एनमकजे की गुफाओं में अब केवल खामोशी का वास है "[4]। एन्डोरलकान एक धीमा नरसंहार है।
जहरीली कीटनाशक के कारण वर्षों तक एन मकजे को जहरीला बना दिया। पूरे इलाके में फैल कर वहाँ के जीव-शशी को तबाह कर दिया । इसमें ड्रैगनफ्लाई, छोटी मछलियाँ और मधुमक्खियों को भी नष्ट कर दिया।यह कृत्रिम आपदा का आख्यान भी है, ।इसमें यह दिखाया गया है कि मानव की लालच कैसे कीड़ों को मारने के लिए पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को ही जहर दे दिया।
"मरंग गोडा नीलकंठ हुआ" उपन्यास मे विकास का चद्म और विस्थापन । मरंग गोडा वास्तव में झारखंड के" जादूगोड़ा "नामक एक पहाड़ी इलाका है। वहां आसपास में रहने वाले संथाल तथा अन्य आदिवासी समाज की सदियों पुराने संस्कृति की विनाश का चित्रण इसमें उजागर करता है। लाखों लोगों ने शहर छोड़ कर शरणार्थी शिविरों में पनाह ली...
-हजारों एकड़ जमीन में खड़ी फसल के नष्ट हो जाने की आशंका विकिरण के प्रभाव से ऊसर हो चुकी ।[5] "हजारों एकड़ जमीन के सालों तक फसल पैदा करने में अक्षम होने की संभावना..." मुनाफा की लालच में कॉपरेट पूँजीपति कंपनियाँ युरेनियम की खोज करके जादूगोडा के वनस्पतियों, जंगल, जल, जमीन को चीर-फाट करके पीला लोहा की अवैध खनन कर दिया। तब से उनके प्राकृतिक संसाधन और पहचान नष्ट कर दिया। रेडियोधर्मी पदार्थों के विकिरण से बडे पैमाने से वहाँ के चेतन- अचेतन वस्तुओं पर भी जहरीला धुवाँ फैलने लगा।
[6]"मरंग गोडा के पहाडों से निकलने वाला धुआँ केवल आसमान को काला नहीं कर रहा ,वह हमारे पूर्वजों की आत्माओं को भी मैला कर रहा है, । यूरेनियम के पीछे कितनी लाशें बिछी है, इसका हिसाब किसी फाइल में नहीं है" यूरेनियम खनन से निकलने वाले गीले कचरे सूखकर छोटे-छोटे बर्फ की मैदान जैसी सफेद स्थल बन चुका है । परंतु वहां बीच-बीच में घास उग जाती है ,तो गांव के भैस,बकरी जैसे असहाय जीव आकर चलते हैं और बीमारियां की। शिकार बन पड़ते हैं। [7]"इस प्रकार रेडियो धर्मी पदार्थ से दूषित पानी को सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है ,तो उससे मिट्टी प्रदूषित होती है और उसमें उपजा अनाज फसल भी जहरीली हो जाती है। "
जहरीली हवा तेजाब आदि आप बनाकर वायु भी प्रदूषित होते हैं ।वहां के मछलियां सा सांप पशु -पक्षी ,मानव जैसे जीव जंतुओं सब अजीब आकार वाले दिखाई पड़ते हैं। [8]"विकास की यह कैसी कीमत है जहाँ धरती जहर उगल रही है..."
नवजात शिशु विकलांग बन जाते हैं ।गर्भवती महिलाओं में इसका असर कई कई पीढ़ियों तक शिकार होती जा रही है । फेफडे में कैंसर, शारीरिक विकृतियाँ , बार-बार गर्भपात होना, नवजात शिशुओं के मर जाना, जैसे कई समस्याएं झेलने पडती है।[9] "जिन्हें बार बार गर्भपात होता, उनसे भी ज्यादा वे औरतें दुखी दिखत जिनके बच्चे जन्म लेने के चौबीस घंटे, तीन दिन या सात दिन तक जिंदा रहने के बाद मर जाया करते थे"
मरंगगोडा के स्त्रियों को ब्याह करने के लिए कोई दूसरे गांव के लोग तैयार भी नहीं हो सकते। यूरेनियम खनन से उत्पन्न रेडियोधर्मी विकिरण का दुष्प्रभाव केवल मरंग गौड़ा तक सीमित नहीं रहा बल्कि दुनिया के सारे द्वीपों में रहने वाले आदिवासी संस्कृतियों के जीवन तक फैले हुए हैं।
लेखिका स्वयं एक एक्टिविस्ट के रूप में प्रदूषण से व्याप्त इलाके में जाकर लोगों की समस्या सुनते हैं और समाधान देने के लिए प्रयास करते रहते हैं। सगेन, जंबीरा, पत्रकार एवं वीडियो रिपोर्टर के रूप में आदित्य श्री आता है और आदिवासियों की आवाज को व्यवस्था तक पहुंचाने का प्रयास करता है। अभिषेक सगेनऔर आदित्य श्री के साथ मिलकर काम करने वाला एक जागरूक पत्र है ।वह आधुनिक शिक्षा और स्थानीय समस्याओं के बीच एक से तु का काम करता है और यूरेनियम के दुष्प्रभावों को उजागर करने में सक्रिय रहता है। प्रज्ञा नमक शोधार्थी भी इसमें शामिल है। [10]"मरंग गोड़ा आज एक ऐसा नीलकंठ है जिसने विकास का सारा जहर अपने कंठ में उतार लिया है।" —
सगेन उपन्यास का महत्वपूर्ण युवा पत्र है वह जादूगोड़ा की आदिवासी समाज का प्रतिनिधित्व करता है । अपनी मिट्टी और जल की संरक्षण के लिए इस तरह शादी के गिलास एक वैचारिक और जमीनी संघर्ष का हिस्सा बनता है।
सुमी, एक सशक्त महिला पात्र जो संघर्ष में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। वह आदिवासियों की जीजीविषा का प्रतीक है । सोमा , बुधुऔर मंगल जैसे पात्र भी विकिरण के कारण होने वाली शारीरिक बीमारियों और पारिवारिक विघटन को झेल रहा है। बुधु और मंगल गांव के साधारण लोग है, रेडिएशन के कारण विकलांग बच्चों के जन्म और अपनी गाय बैलों की मौत से डरे हुए हैं। यह आम जनता के लाचारी को दर्शाते हैं। सागर नमक युवा भी व्यवस्था की संवेदनहीनता के खिलाफ घड़ा होता है।
मरंग गोडा पहाड़ एक प्रतीकात्मक तत्व के रूप में खड़े हैं । पहाड़ियों का देवता है । एक जीवंत पात्र की तरह पेश किया गया है ।। जिसने यूरेनियम के नीले जहर को पी लिया है और अब वह नीलकंठ बन गया है।

इस रेडियोधर्मी विकिरण का दुष्प्रभाव द्वितीय विश्व युद्ध में प्रयोग किए गए हिरोशिमा परमाणु बमपों के कई गुना तीखा अधिक है । यह भी एक खामोश आक्रमणकारी के रूप में विशाल पर्यावरण को नष्ट करता रहा है । उसके विरुद्ध कई आदिवासी संघर्ष शुरू किया। यूरेनियम एक सर्प की तरफ धरती के अंदर ही पड़ा रहने देना है ,नहीं तो वह सबको धंस लेंगे।

3.पारिस्थितिकी नारीवाद

स्त्री और प्रकृति एक ही है। यह एक ऐसा आंदोलन है, जो महिलाओं की शोषण और प्रकृति के विनाश के बीच गहरे संबंध को उजागर करता है पुरुष प्रधान मानसिकता ही स्त्री और प्रकृति का शोषण के लिए जिम्मेदार है।

दोनों उपन्यासों में महिलाओं को प्रकृति के सबसे करीब दिखाया गया है । प्रदूषण का सीधा प्रभाव प्रजनन क्षमता और भविष्य पीढ़ी पर पड़ता है। स्त्री पात्रों का संघर्ष जल और जमीन बचाने के लिए जद्दो जहद।

4.निष्कर्ष

दोनों उपन्यासों में कीटनाशक तथा रेडियोधर्मी विवरण जैसी औद्योगिक आपदाओं की मानवीय और पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण है । विकास की अंधी दौड़ और हाशिये के समाज के संघर्ष दिखाते हैं । विषैली धुवां का दुष्प्रभाव का असर दिखाकर भविष्य में पर्यावरण संरक्षण के लिए जागृत करने की चेतना देती है। पर्यावरण से तालमेल से रहना प्राकृतिक जल स्रोत, सर्पककावु जैसे संसाधनों का संरक्षण करना हर एक मानव का हक और धर्म होना चाहिए। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का नए रूप भी है । विकास का वर्तमान मॉडल विनाशकारक है । इको क्रिटिसिज्म के माध्यम से साहित्य प्रतिरोध दर्ज करता है । नीलकंठ प्रतीक है ।विष पान करने वाली धरती और जनता का। एनमकजे और मरंग गोडा नीलकंठ हुआ उपन्यासों में पारिस्थितिकी नारीवाद दर्शाते हैं ।[11]"इस विनाश से बचाने का दायित्व साहित्य का ही रहा है।""। साहित्य ही समय-समय पर मानव का मार्गदर्शन करती रही है।" औरत और प्रकृति सर्वहारा और और सर्वंसहा है । फिर भी उन में जान और फूल उगे होंगे। यानी पर्यावरण संरक्षण के बिना हमारे अस्तित्व भी मिट जाएगी। "ये दो किताबें भारत के दो अलग-अलग कोनों -उत्तर-पूर्व का झारखंड और दक्षिण का केरल -की कहानियाँ हैं, जो साबित करती हैं कि पर्यावरण का संकट किसी एक क्षेत्र का नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र और मानवता का साझा संकट है।"

संदर्भ सूची :

1.डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत -पर्यावरण और समकालीन हिन्दी साहित्य- पृष्ठ 15
2. अंबिका सुतन मंगाड-एनमकजे-पृष्ठ 68
3.अंबिका सुतन मंगाड-एनमकजे-पृष्ठ 68
4.अंबिका सुतन मंगाड-एनमकजे- 112
5.महुआ माजी_मरंग गोडा नीलकंठ हुआ-पृ- 398
6.महुआ माजी_मरंग गोडा नीलकंठ हुआ-पृ-145
7.महुआ माजी _ मरंग गोडा नीलकंठ हुआ-पृ_92
8.महुआ माजी _ मरंग गोडा नीलकंठ हुआ -पृष्ठ 18
9.महुआ माजी-मरंग गोडा नीलकंठ हुआ -पृष्ठ 182
10.महुआ माजी -मरंग गोडा नीलकंठ हुआ -पृष्ठ 18
11.डॉ. रंजित एम्,डॉ. सूर्या बोस-साहित्य की आँखों से पर्यावरण की झलक-पृष्ठ 98